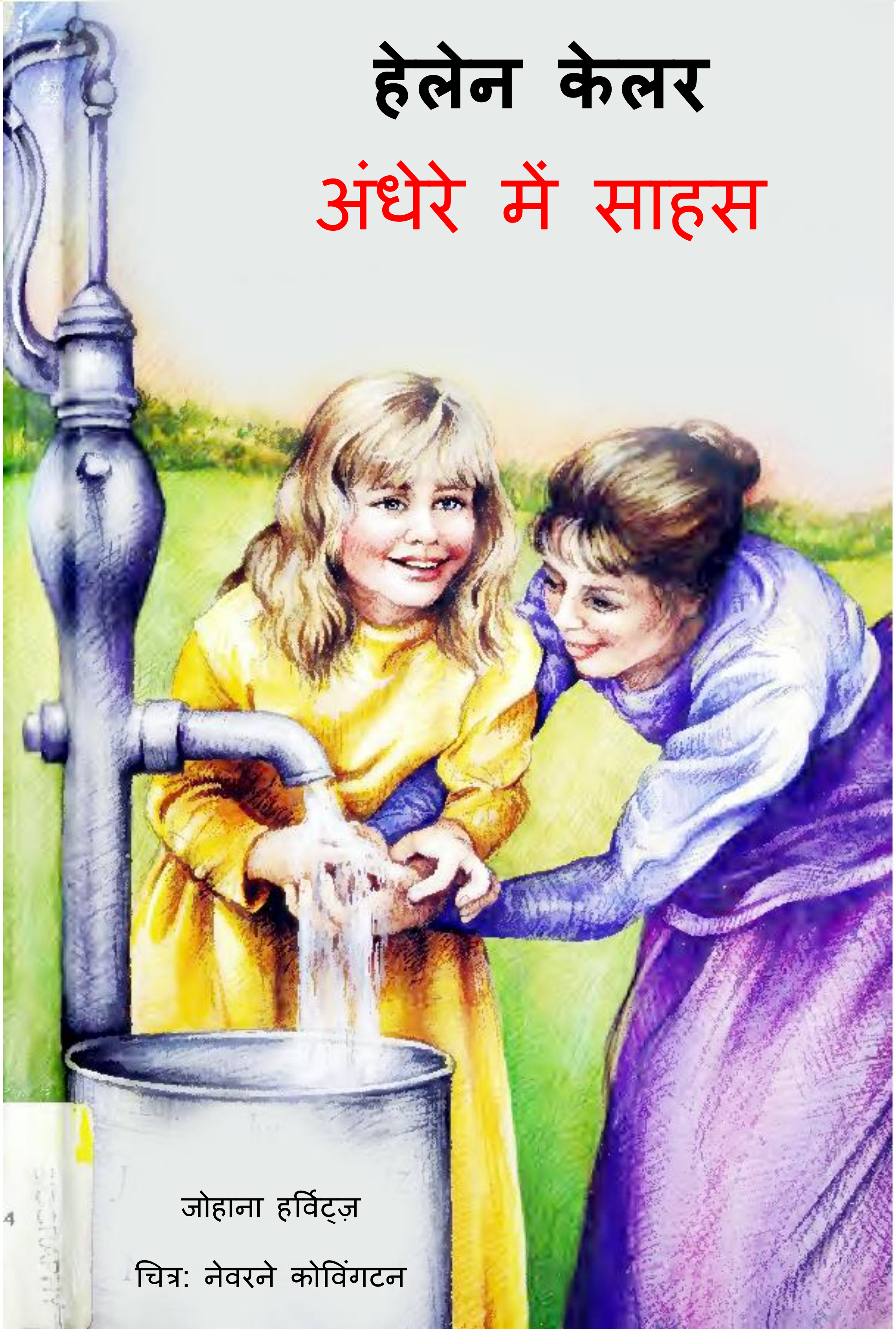
हेलेन केलर

अंधेरे में साहस



जोहाना हर्विट्ज़

चित्र: नेवरने कोविंगटन

हेलेन केलर

अंधेरे में साहस



जोहाना हर्विट्ज़

चित्र: नेवरने कोविंगटन



अध्याय 1

हेलेन केलर का जन्म 27 जून, 1880 को अलबामा के एक फार्म में हुआ था.

मिस्टर और मिसेज़ केलर अपनी सुंदर, स्वस्थ बच्ची को पाकर बहुत खुश थे. लेकिन तभी कुछ भयानक हुआ.

जब नन्ही हेलेन डेढ़ साल की थी, तो वह बहुत बीमार हो गई. उसे तेज़ बुखार हो गया. उसके माता-पिता को डर था कि वह मर जाएगी.

कुछ दिनों बाद, बुखार चला गया. लेकिन अभी भी कुछ गड़बड़ थी. नन्ही हेलेन अब न देख सकती थी और न ही सुन सकती थी. बीमारी ने उसे अंधा और बहरा बना दिया था.

केलर परिवार की प्यारी बच्ची अब एक शरारती बच्ची बन गई. जब उसके माता-पिता उसे छूने की कोशिश करते, तो वह उन्हें लात मारती और खरोंचती.

वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती और चीखती. वरना वह किसी को कैसे बता पाती कि उसे भूख लगी है, थकान है या उसे डर लग रहा है?



केलर परिवार के लिए खाने का समय बहुत बुरा होता था. हेलेन सबके खाने में हाथ डालती थी. वह खाने की मेज़ पर चीज़ें फेंकती थी.

हेलेन जो चाहती थी, करती थी. उसके माता-पिता उसे मना नहीं सकते थे.





एक बार, हेलेन आधी रात को जाग गई. चूँकि वह देख नहीं सकती थी, इसलिए उसे लगा कि सुबह हो गई है. मिसेज़ केलर ने अपनी बेटी को वापस बिस्तर पर सुलाने की कोशिश की. लेकिन हेलेन उठने और कपड़े पहनने की ज़िद पर अड़ी रही. फिर वह रसोई में गई. हालाँकि रात का समय था, फिर भी वह नाश्ते के लिए चिल्लाई.



हेलेन के माता-पिता समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें. वे अपनी बच्ची की मदद करना चाहते थे. लेकिन कैसे? वे किसी अंधे या बहरे व्यक्ति को नहीं जानते थे. उन्हें नहीं पता था कि मदद के लिए कहाँ जाएँ.

एक दिन, मिसेज़ केलर ने डॉ. चिशोल्म के बारे में सुना. वह बाल्टीमोर, मैरीलैंड में एक विशेष नेत्र चिकित्सक थे. उनके कुछ मरीज़ हेलेन की तरह अंधे और बहरे थे. पहली बार, मिसेज़ केलर को थोड़ी उम्मीद जगी. शायद डॉ. चिशोल्म हेलेन की मदद कर सकें. केलर दंपत्ति अपनी बेटी को तुरंत बाल्टीमोर ले गए.

डॉ. चिशोल्म हेलेन का इलाज नहीं कर सके. लेकिन उन्होंने केलर दंपत्ति को चिंता न करने के लिए कहा. उन्होंने कहा कि एक अंधा बच्चा भी बहुत कुछ सीख सकता है. उन्होंने उन्हें अलेक्जेंडर ग्राहम बेल से मिलने वाशिंगटन भेजा.

मिस्टर बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया था. और चूँकि उनकी पत्नी बधिर थीं, इसलिए उन्हें बधिरों को पढ़ाने के बारे में बहुत कुछ पता था. मिस्टर बेल ने केलर दंपत्ति को पर्किन्स इंस्टीट्यूशन फॉर द ब्लाइंड के बारे में बताया.

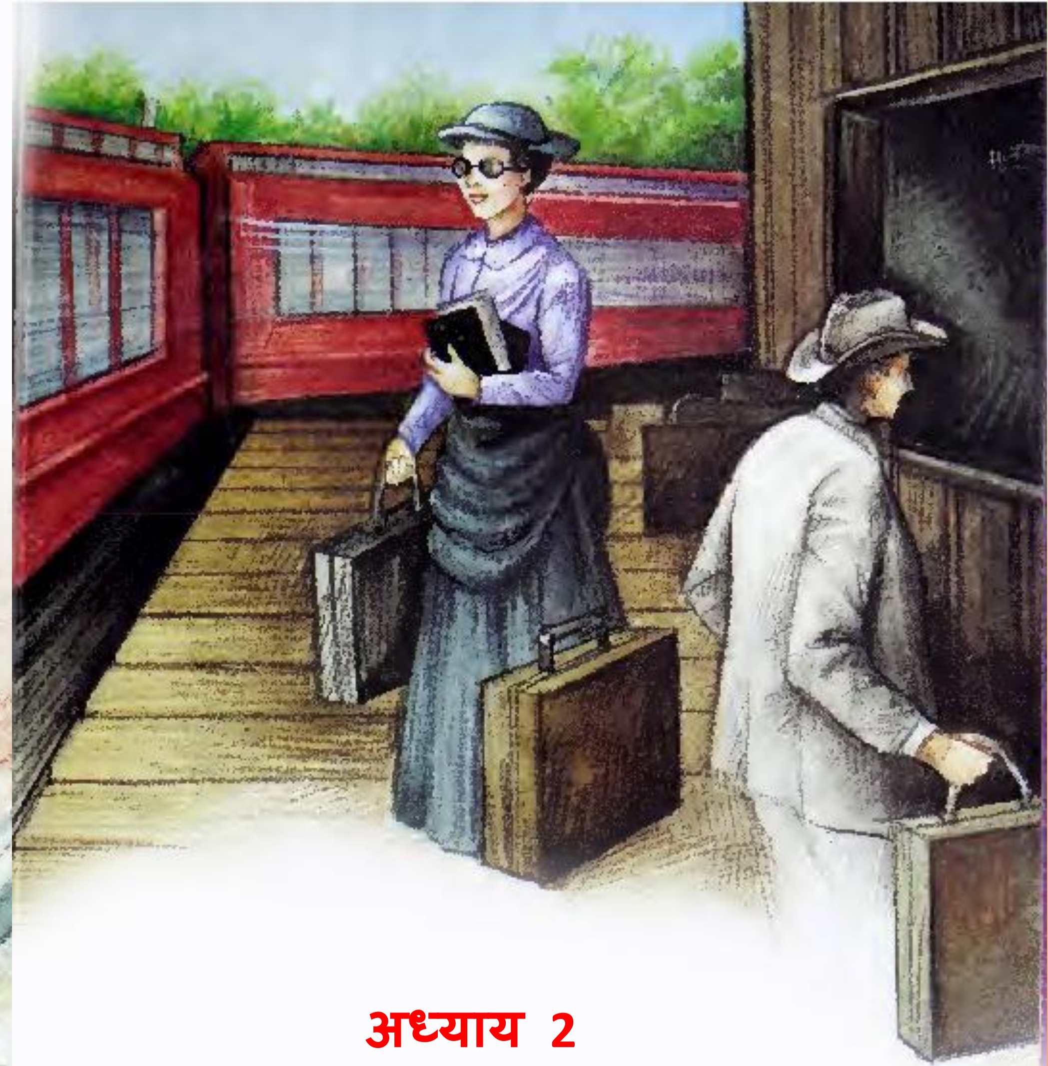


पर्किन्स इंस्टीट्यूशन बोस्टन, मैसाचुसेट्स में एक विशेष स्कूल था. इसकी एक छात्रा लॉरा ब्रिजमैन नाम की एक लड़की थी. हेलेन की तरह, लॉरा भी अंधी और बहरी थी. पर्किन्स के शिक्षकों ने उसे सिलाई करना सिखाया.

मिस्टर बेल ने कहा कि पर्किन्स का एक शिक्षक हेलेन की मदद कर सकता है.

उससे केलर दंपत्ति की उम्मीदें बढ़ीं.





अध्याय 2

मिस्टर और मिसेज़ केलर ने पर्किन्स इंस्टीट्यूशन को एक पत्र लिखा. एक शिक्षिका ने जवाब में लिखा. उसका नाम ऐनी सुलिवन था. दोस्त उसे एनी कहते थे.

एनी, केलर परिवार के साथ रहने और हेलेन को पढ़ाने के लिए राज़ी हो गई. हेलेन अब लगभग सात साल की हो गई थी.

3 मार्च, 1887 को, एनी अलबामा आई. यह हेलेन के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन साबित हुआ.

बचपन में, एनी खुद लगभग अंधी थी. सौभाग्य से, कई ऑपरेशनों ने उसे फिर से देखने में मदद की. लेकिन एनी कभी नहीं भूली कि अंधी होना कैसा होता है. उसे उम्मीद थी कि वह छोटी हेलेन की मदद कर पाएगी.

एनी ने तुरंत देखा कि हेलेन एक लंबी, सुंदर लड़की थी. लेकिन उसने यह भी देखा कि हेलेन खुश नहीं थी. वह लगभग कभी मुस्कुराती ही नहीं थी.

हेलेन अपने आस-पास की दुनिया को समझ नहीं पा रही थी. वह अंधेरे और सन्नाटे में रहती थी. वह लोगों को अपनी भावनाओं को बयां नहीं कर पा रही थी. कोई आश्चर्य नहीं कि वह इतनी दुखी थी!



शुरू में हेलेन अच्छी छात्रा नहीं थी. वह एनी की बात नहीं मानती थी. हेलेन को अपनी मनमानी करने की आदी थी. उसके माता-पिता ने उसे मनमानी करने की इजाज़त दी थी. उन्होंने उसे कभी सज़ा नहीं दी थी. उन्हें लगता था कि वह अपने व्यवहार पर नियंत्रण नहीं रख सकेगी.

एनी को हेलेन को सब कुछ सिखाना पड़ता था. एनी अपनी नन्ही छात्रा के साथ बहुत सख्त थी. हेलेन मज़बूत और ज़िद्दी थी—और एनी भी. कभी-कभी हेलेन एनी को चुटकी काटती या मारती, जब हेलेन उसे मारती, तो एनी उसे वापस मारती थी. धीरे-धीरे, हेलेन ने अपनी नई शिक्षिका की बात पर ध्यान देना सीखा.







एनी ने हेलेन को कई नई चीज़ें सिखाईं. उसने उसे खाने की मेज़ पर बैठना सिखाया. उसने उसे चाकू, काँटे और चम्मच से खाना सिखाया. उसने उसे खुद कपड़े पहनना और अपने बालों में कंघी करना सिखाया.

एनी अपनी छात्रा को कुछ और भी ज़रूरी सिखाना चाहती थी. वह नन्ही हेलेन को शब्दों को समझना सिखाना चाहती थी.

पर्किन्स इंस्टीट्यूशन में, एनी ने उंगलियों की एक खास वर्णमाला सीखी थी. हाथों की अलग-अलग मुद्राएँ अलग-अलग अक्षरों को दर्शाती थीं. वह अपने हाथों से शब्दों को बोलकर बधिर लोगों से बात कर सकती थी.



हेलेन ने अपनी देखने और सुनने की शक्ति खो दी थी. लेकिन उसकी स्पर्श करने की शक्ति अभी भी बची हुई थी. एनी ने हेलेन को यह खास वर्णमाला सिखाने की पूरी कोशिश की.

उसने हेलेन के हाथ में एक के बाद एक शब्द लिखे. हेलेन ने एनी की नकल की और उँगलियों की हरकतें दोहराईं. उसने गुड़िया, केक, दूध और मग लिखना सीखा. लेकिन उसे इन शब्दों का मतलब समझ नहीं आया. एनी ने बार-बार कोशिश की, लेकिन हेलेन फिर भी नहीं समझ पाई.



एक बसंत के दिन, एनी और हेलेन बाहर टहलने गईं. एनी हेलेन को एक कुएँ के पास ले गई. शिक्षिका ने नल से थोड़ा पानी पंप किया और उस पानी को हेलेन की उंगलियों पर बहने दिया. धीरे-धीरे हेलेन ने उसकी हथेली पर "पानी" शब्द लिखा. फिर उसने बार-बार यही किया.



अचानक, छोटी बच्ची समझ गई. गीला तरल और उसकी हथेली पर लिखा जा रहा शब्द एक ही चीज़ थे! "पानी".



इसके बाद, हेलेन ने जल्दी से दूसरे शब्द सीख लिए. एक दिन उसने तीस नए शब्द सीखे!

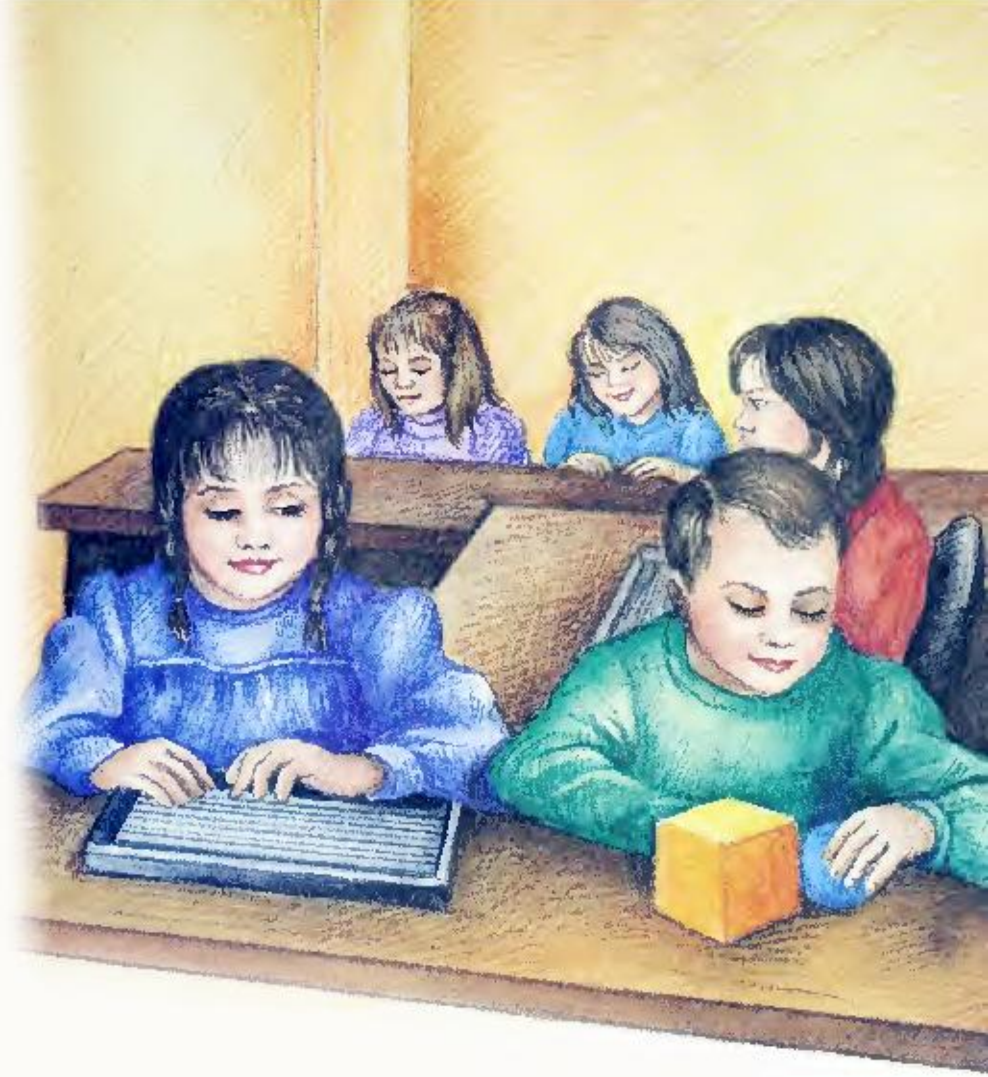
एनी सुलिवन को अपनी छात्रा पर गर्व था. उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि हेलेन इतनी जल्दी सीख गई. अब हेलेन सब कुछ जानना चाहती थी. उसने एक बिल्कुल नई और रोमांचक दुनिया खोज ली थी.

एनी ने हेलेन की प्रगति को चमत्कार कहा. उसकी उपलब्धियाँ अद्भुत थीं. उसने असंभव को संभव कर दिखाया था.

हेलेन अब अपने विचार व्यक्त करना जानती थी. पहली बार, वह खुश थी. अब उसका रोना बंद हो गया. जब भी एनी उसे कोई नया शब्द सिखाती, हेलेन अपनी शिक्षिका को गले लगाती और उसे चूम लेती.







अध्याय 3

मई 1888 में, हेलेन एक नई चुनौती के लिए तैयार थी. अपने आठवें जन्मदिन से कुछ समय पहले, वह एनी के साथ बोस्टन गई. वे एनी के पुराने स्कूल, पर्किन्स इंस्टीट्यूशन में गईं. वहाँ हेलेन ने ब्रेल लिपि पढ़ना सीखा.

ब्रेल लिपि लेखन का एक रूप है. इसका आविष्कार फ्रांस में लुई ब्रेल नामक एक नेत्रहीन व्यक्ति ने किया था. उभरे हुए बिंदुओं के पैटर्न वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को दर्शाते हैं. ब्रेल प्रणाली का उपयोग करके, नेत्रहीन लोग अपनी उंगलियों से अक्षरों को महसूस कर सकते हैं. इस अद्भुत वर्णमाला के साथ, हेलेन ने पढ़ना सीखा!



हेलेन को पहले से ही शब्दों से प्यार था. अब उसे शब्दों से जुड़ी कहानियाँ भी पसंद आने लगीं. उसने ढेर सारी किताबें पढ़ीं. और फिर, एक विशेष ब्रेल टाइपराइटर का उपयोग करके, उसने अपनी भी कुछ कहानियाँ लिखीं.

हेलेन पर्किन्स इंस्टीट्यूशन में बहुत कुछ सीख सकती थी. जल्द ही वह और एनी सर्दियाँ बोस्टन में और गर्मियाँ अलबामा में घर पर बिताने लगीं.

जब हेलेन दस साल की थी, तो उसकी मुलाकात बोस्टन में एक और शिक्षिका से हुई. उसका नाम सारा फुलर था. सारा हेलेन को बोलना सिखाना चाहती थी.

उससे पहले, हेलेन सिर्फ़ अपनी उंगलियों से ही बोल पाती थी. वह सिर्फ़ उन्हीं लोगों से बात कर सकती थी जो एनी द्वारा सिखाई गई उस ख़ास हाथ की भाषा को समझते थे. सारा हेलेन को मुँह से बोलना सिखाना चाहती थी.



सबसे पहले हेलेन ने सारा के चेहरे पर अपना हाथ फेरा. जब सारा बोल रही थी, तो उसने उसके होंठों और जीभ को महसूस किया. फिर हेलेन ने इन हरकतों की नकल की. उसने आवाज़ निकालने की कोशिश की. हेलेन का पहला बोला हुआ वाक्य था, "यह गर्म है."



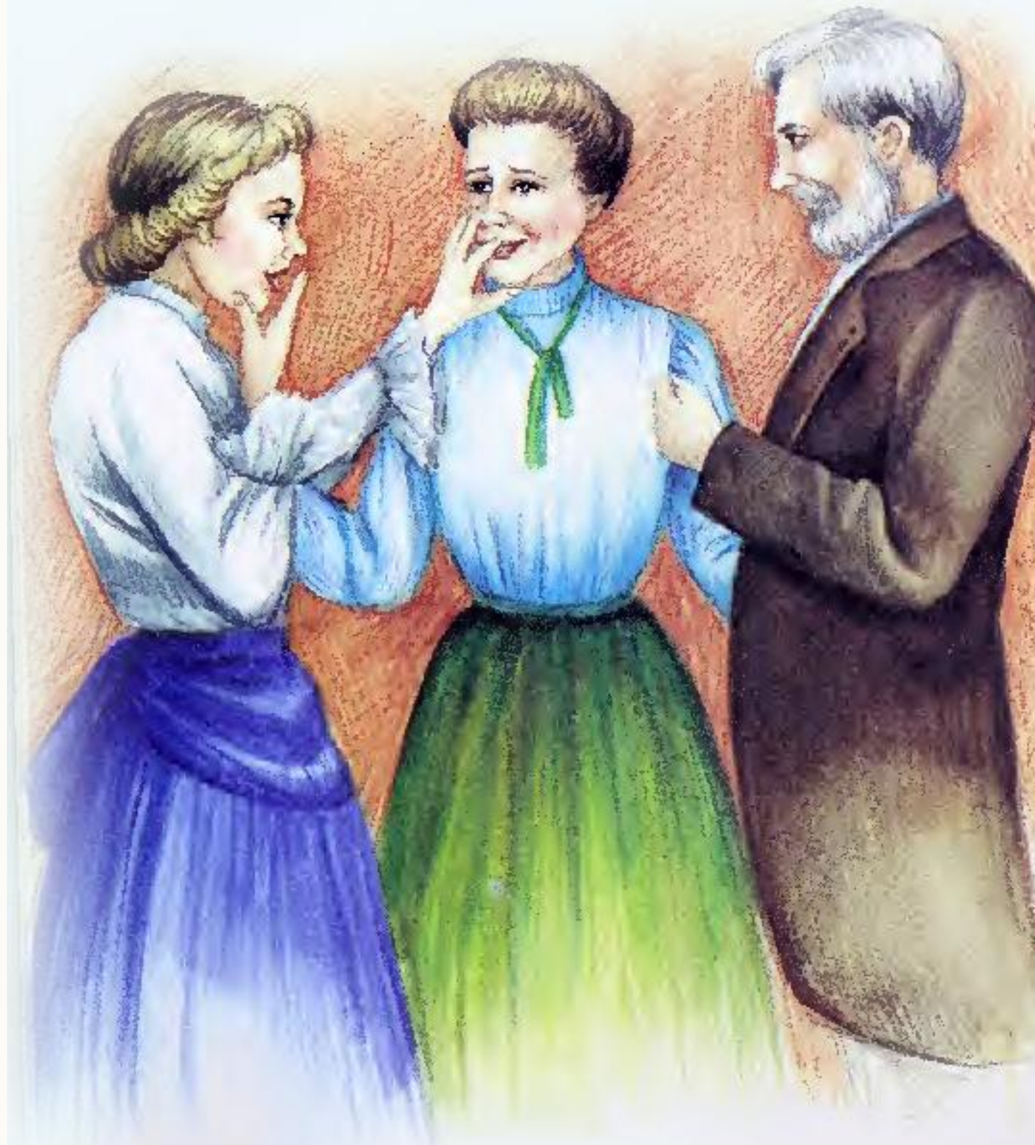
हेलेन को अपनी बोली सुधारने में बहुत लंबा समय लगा. उसे बहुत कठिन अभ्यास करना पड़ा. शुरुआत में, सिर्फ़ एनी और सारा ही हेलेन की बात समझ पाती थीं. एनी को हेलेन के शब्दों को दोहराना पड़ता था ताकि दूसरे भी समझ सकें.

लेकिन हेलेन ने खुद बोलने की ठान ली थी. वह हार नहीं मानती थी. आखिरकार उसने और साफ़ बोलना सीख लिया. जब हेलेन बोलती थी, तो सब सुनते थे!

हेलेन ने पर्किन्स इंस्टीट्यूशन में एक और बात सीखी. उसने लोगों के होंठ पढ़ना सीखा.

वह वास्तव में लोगों के होठों को हिलते हुए नहीं देख सकती थी. लेकिन वह उन्हें अपनी उंगलियों से महसूस कर सकती थी. बोलने वाले के होठों और गले पर हाथ रखकर, हेलेन समझ सकती थी कि वो क्या कह रहे थे.

हेलेन ने जो सीखा, उससे सभी हैरान थे. वह उन पहली नेत्रहीन और बधिर लोगों में से एक थीं जिन्होंने ज़ोर से बोलना और बोले गए शब्दों को समझना सीखा.





अध्याय 4

जब हेलेन चौदह वर्ष की थीं, तब उसने न्यूयॉर्क शहर के राइट-ह्यूमेसन स्कूल फॉर द डेफ में दाखिला लिया. स्कूल ने उनकी वाणी और होंठ पढ़ने के कौशल को बेहतर बनाने में मदद की. हस्तलिपि और ब्रेल लिपि का उपयोग करके, हेलेन ने जर्मन और फ्रेंच भी सीखी.

लेकिन हेलेन के लिए यह पर्याप्त नहीं था. उसका एक नया लक्ष्य था. हेलेन कॉलेज जाना चाहती थी. वह ऐसे छात्रों के साथ पढ़ना चाहती थी जो देख और सुन सकते थे.

तीन साल तक, हेलेन ने प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए कड़ी मेहनत की. परीक्षाओं की ब्रेल लिपि में नकल की गई ताकि हेलेन उन्हें पढ़ सके. उसे चिंता थी कि शायद वह पास न हो. फिर एक दिन, खुशखबरी वाला एक पत्र आया. हेलेन को रैडक्लिफ कॉलेज में स्वीकार कर लिया गया था!







हेलेन 1900 की शरद ऋतु में रैडक्लिफ़ गईं. कक्षा में, एनी सुलिवन हेलेन के बगल में बैठती थीं. वह प्रोफ़ेसर के शब्दों को हेलेन के हाथ से लिखती थीं. हेलेन अपने असाइनमेंट ब्रेल लिपि में लिखती थीं. वह एक उत्कृष्ट छात्रा थीं.

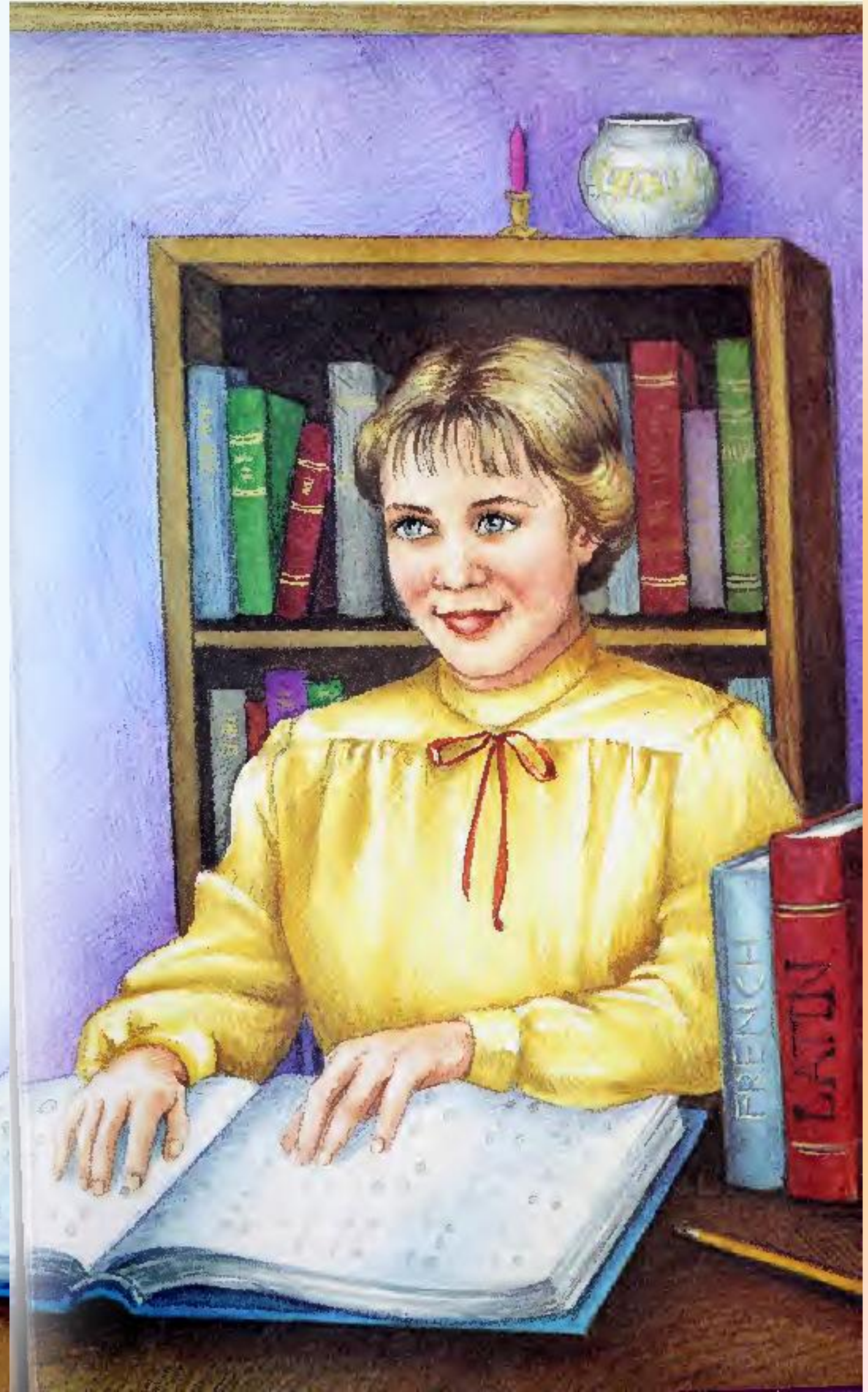
हेलेन ने कॉलेज में अंग्रेज़ी और जर्मन में स्नातक की उपाधि प्राप्त की. उन्होंने सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की.

एक समय, वह अपनी बात बिल्कुल भी व्यक्त नहीं कर पाती थीं. अब वह कई भाषाएँ समझ और बोल सकती थीं. नन्ही हेलेन एक सुंदर, शिक्षित महिला बन गई थीं.

जब हेलेन अभी कॉलेज में थीं, तब *लेडीज़ होम जर्नल* पत्रिका के एक संपादक ने हेलेन से उनके जीवन के बारे में लिखने के लिए कहा. वे लेख 1902 में प्रकाशित हुए.

इसके तुरंत बाद, हेलेन ने अपने बारे में फिर से लिखना शुरू किया. उन्होंने *"द स्टोरी ऑफ़ माई लाइफ़"* नामक एक किताब लिखी. बेशक, यह उनके जीवन का एक छोटा सा हिस्सा था. जब यह प्रकाशित हुई तब वह केवल बाईस वर्ष की थीं!

दुनिया भर के लोग हेलेन की कहानी पढ़ना चाहते थे. इस किताब की हज़ारों प्रतियाँ बिकीं.



अध्याय 5

हर कोई हेलेन को जानना चाहता था! हेलेन और एनी ने दुनिया भर की यात्राएँ शुरू कर दीं. हेलेन ने यूरोप, मिस्र, ऑस्ट्रेलिया और जापान का दौरा किया. उन्होंने नेत्रहीन लोगों की मदद के बारे में भाषण दिए. वह उन सभी लोगों तक पहुँचना चाहती थीं जिन्होंने उम्मीद छोड़ दी थी.





अपने जीवनकाल में, हेलेन कई प्रसिद्ध लोगों से मिलीं: अलेक्जेंडर ग्राहम बेल, मार्क ट्वेन, चार्ली चैपलिन, राष्ट्रपति और मिसेज़ फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट, राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी, और कई अन्य. वे सभी हेलेन से मिलने के लिए उत्सुक थे.

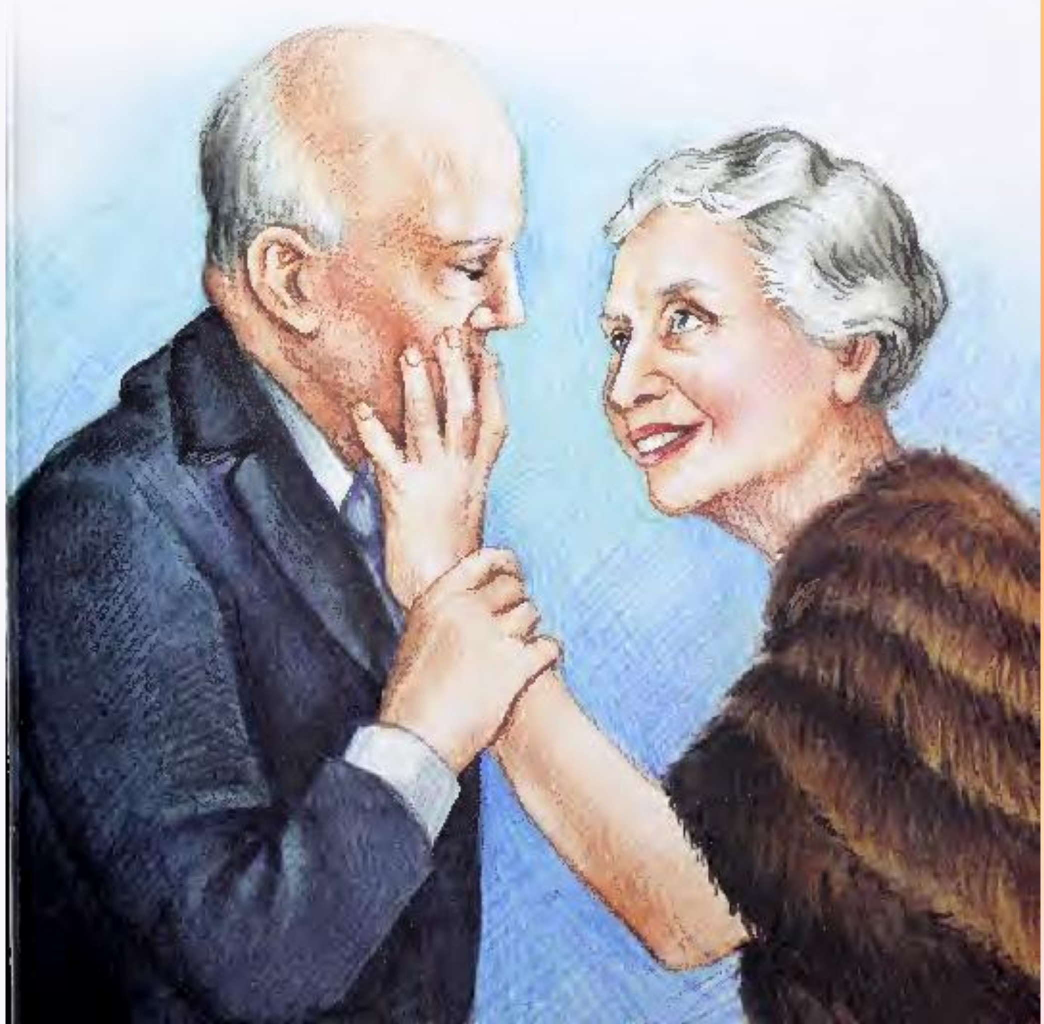
उनसे मिलने वाले एक व्यक्ति ने कहा कि हेलेन "बिजली के आवेश" जैसी थीं. वह हेलेन की ऊर्जा और उत्साह से अभिभूत था.

1953 में, हेलेन राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर से मिलीं. उन्होंने राष्ट्रपति से पूछा कि क्या वह उनका चेहरा छू सकती हैं. वह अपनी उंगलियों से उन्हें देखना चाहती थीं, राष्ट्रपति आइजनहावर सहमत हो गए. हेलेन ने उनके मुँह को छुआ.

"आपकी मुस्कान बहुत सुंदर है," हेलेन ने उनसे कहा.

"लेकिन मेरे सिर पर ज़्यादा बाल नहीं हैं;' राष्ट्रपति ने उत्तर दिया.

बेशक, हेलेन की उँगलियाँ भी यह देख पातीं!







हेलेन एक अद्‌भुत इंसान थीं. इससे पहले किसी अंधे और बहरे व्यक्ति ने इतना कुछ नहीं किया था.

हालाँकि वह संगीत नहीं सुन सकती थीं, हेलेन ने नृत्य सीखा. वह संगीत समारोहों में भी जाती थीं. हालाँकि वह संगीत की ध्वनियाँ नहीं सुन सकती थीं, लेकिन वह संगीत के कंपन को महसूस करती थीं.



वह घुड़सवारी करती थीं और अपने कुत्तों के साथ खेलती थीं. हेलेन को अपने बगीचे में काम करना भी बहुत पसंद था. हालाँकि उन्होंने अपने उगाए फूल कभी नहीं देखे, लेकिन उन्हें उनकी खुशबू बहुत पसंद थी.

हेलेन केलर इस बात का प्रमाण थीं कि लोग लगभग कुछ भी कर सकते हैं. शारीरिक समस्या या विकलांगता वाले लोग भी अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं.





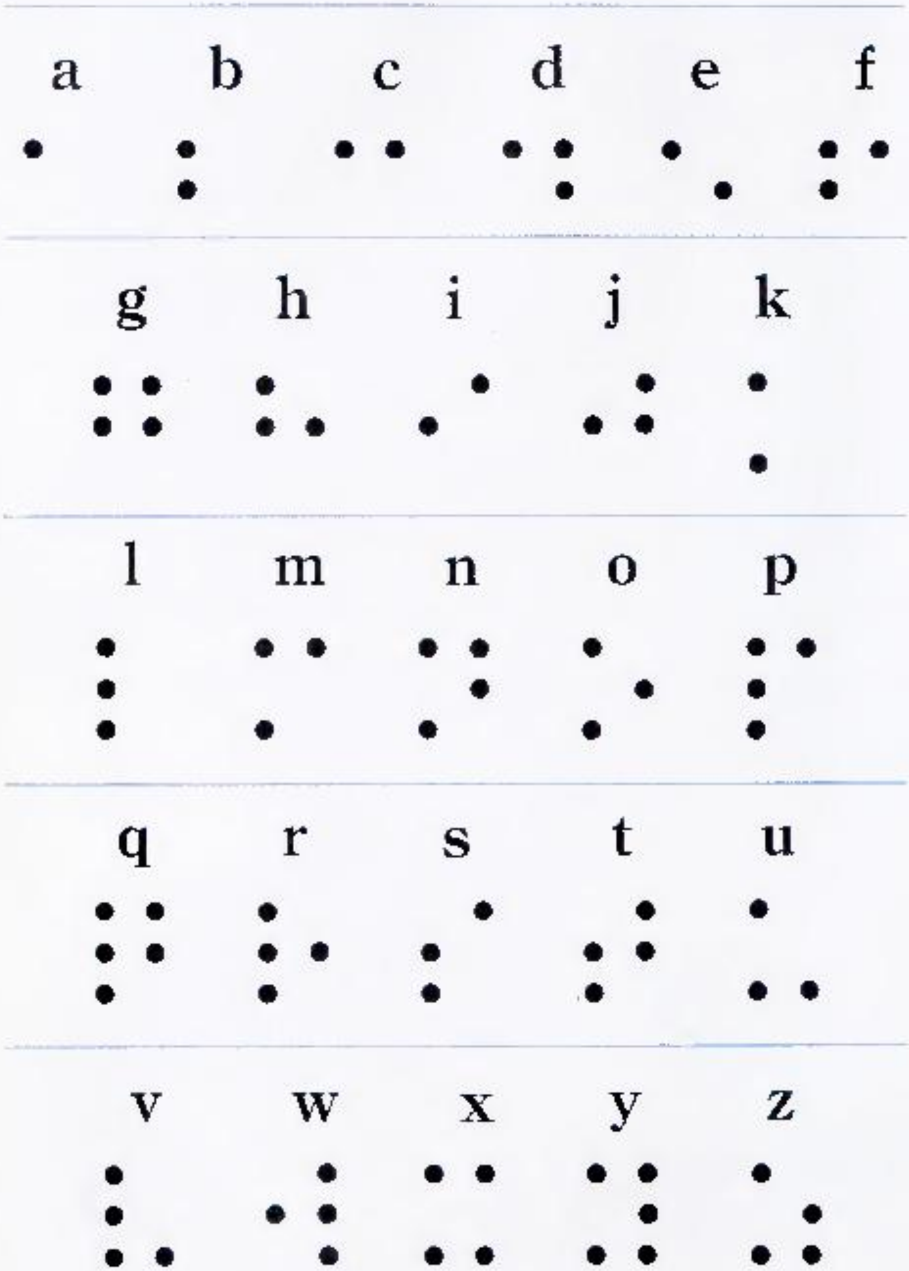
हेलेन केलर का निधन 1 जून, 1968 को हुआ था. यह उनके 88वें जन्मदिन से कुछ ही हफ़्ते पहले की बात थी.

हेलेन की कहानी बार-बार दोहराई गई है. वह किताबों, नाटकों, फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों का विषय रही हैं. संयुक्त राज्य डाक सेवा ने उन्हें एक डाक टिकट समर्पित किया है. और उनके नाम से एक संगठन नेत्रहीन लोगों की मदद के लिए काम करता है.

हेलेन केलर का जीवन खामोशी और अंधकार से भरा था. लेकिन उनमें अपने दिनों को रोशन करने का साहस और दृढ़ संकल्प था.



ब्रेल वर्णमाला



हेलेन केलर के साथ

"पढ़ने की ओर कदम बढ़ाएँ":

हेलेन केलर एक उदास बच्ची थीं.

जब वह बच्ची ही थीं,

तो वह बहुत बीमार हो गईं.

इस बीमारी ने हेलेन को अंधा

और बहरा बना दिया.

अचानक, वह देख या सुन नहीं पा रही थीं.

हेलेन की दुनिया अंधकारमय और खामोश थी...

जब तक कि उनकी मुलाकात

एक अद्भुत शिक्षिका एनी से नहीं हुई.

यह कहानी पढ़ें और जानें कि एनी ने

हेलेन की ज़िंदगी कैसे बदल दी!